

## शान्ति-पाठ (लघु)

(हरिगीतिका)

शास्त्रोक्त विधि पूजा महोत्सव, सुरपति चक्री करें ।  
हम सारिखे लघु पुरुष कैसे, यथाविधि पूजा करें ॥  
धन-क्रिया-ज्ञान रहित न जाने, रीत पूजन नाथजी ।  
हम भक्तिवश तुम चरण आगै, जोड़ लीने हाथजी ॥१॥

दुःख-हरन मंगलकरन, आशा-भरन जिन पूजा सही ।  
यह चित्त में श्रद्धान मेरे, शक्ति है स्वयमेव ही ॥  
तुम सारिखे दातार पाये, काज लघु जाचूँ कहा ।  
मुझ आप-सम कर लेहु स्वामी, यही इक वांछा महा ॥२॥

संसार भीषण विपिन में, वसु कर्म मिल आतापियो ।  
तिस दाहतैं आकुलित चिरतैं, शान्तिथल कहूँ ना लियो ॥  
तुम मिले शान्तिस्वरूप, शान्ति सुकरन समरथ जगपती ।  
वसु कर्म मेरे शान्ति कर दो, शान्तिमय पंचमगती ॥३॥

जबलौं नहीं शिव लहूँ, तबलौं देह यह नर पावना ।  
सत्संग शुद्धाचरण श्रुत, अभ्यास आतम भावना ॥  
तुम बिन अनंतानंत काल, गयो रुलत जगजाल में ।  
अब शरण आयो नाथ युग कर, जोर नावत भाल मैं ॥४॥

(दोहा)

कर प्रमाण के मान तैं, गगन नपै किहि भंत ।  
त्यों तुम गुण वर्णन करत, कवि पावे नहिं अंत ॥५॥

✽ अपने दोषों के कारण एवं कर्ता तुम स्वयं ही हो,  
विश्व में अन्य कोई नहीं ।